दक्षिण एशिया में भारत एवं मालदीव का भू-राजनीतिक महत्व एवं उनके मध्य द्विपक्षीय संबंधों का अध्ययन

(वर्ष 2008 से 2024 तक)

पीएच.डी. शोध प्रारूप

राजनीति विज्ञान विभाग

रांची विश्वविद्यालय, रांची।

(सामाजिक विज्ञान संकाय)

शोध निर्देशक

डॉ0 आशुतोष कुमार पाण्डेय

सहायक प्राध्यापक

राजनीति विज्ञान विभाग

संत् जेवियर्स महाविद्यालय, रांची

शोधार्थी

दिव्या मेघा तिर्की

यूजीसी नेट जे.आर.एफ.

2024

दक्षिण एशिया में भारत एवं मालदीव का भू-राजनीतिक महत्व एवं उनके मध्य द्विपक्षीय संबंधों का अध्ययन

(वर्ष 2008 से 2024 तक)

शोध विषय की अद्यतन स्थितिः

"भू-राजनीति राज्य की भौगोलिक आत्मा है। "(विगर्ट एवं अन्यः प्रिंसिपल ऑफ पोल्टिकल ज्योग्राफी, 1957, पृ. 6)। महान राजनीतिक विचारक अरस्तू और प्लेटों अपने आदर्श राज्य में जनसंख्या और भौगोलिक क्षेत्रों को उस राज्य की शक्तियों और कमजोरियों के रूप में इंगित करते हैं। भारतीय यथार्थवादी विचारक कौटिल्य के अनुसार सप्तांग सिद्धांत तथा मंडल सिद्धांत में पड़ोसी राज्यों के साथ संबंध स्थापित करने के संदर्भ में उस राज्य की भौगोलिक स्थिति का ज्ञान महत्वपूर्ण हो जाता है। भू-राजनीति किसी भी राज्य की शक्ति का मूर्त तत्व माना जाता है। जो उस राज्य की शक्ति एवं प्रकृति को समझने और उसके वैदेशिक नीति के संचालन को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

दक्षिण एशिया में भारत एवं मालदीव की भू-राजनीतिक स्थिति

दक्षिण एशिया ,एशिया महाद्वीप का हिस्सा है। अपनी वृहद भौगोलिक स्थिति के कारण यह क्षेत्र विभिन्नताओं से तृप्त है। दक्षिण एशियाई राष्ट्रों में मुख्य रूप से भारत,मालदीव पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, बांग्लादेश और अफगानिस्तान शामिल है। इन देशों के राजनीतिक परिस्थितियों में विभिन्नताओं के बावजूद इनके भाषाई, सांस्कृतिक, धार्मिक, रीति रिवाजों में अनेक समानताएं विद्यमान हैं। भारत की भौगोलिक अवस्थिति दक्षिण एशिया में बेहद महत्वपूर्ण है। इसकी सीमाएं हिमालय पर्वतों, समुद्र और महासागरों जैसे प्राकृतिक सीमाओं से घिरी हुई है। इसके साथ ही यह देश जनसंख्या और क्षेत्रफल के आधार पर सबसे विशाल राष्ट्र है। अपनी इन्हीं विशेषताओं और भू राजनीतिक स्थिति के कारण भारत दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के केन्द्र में हमेशा स्थित रहता है। वहीं मालदीव एक द्वीपीय देश है। जो अपनी जनसंख्या और क्षेत्रफल के आधार पर दक्षिण एशिया का सबसे छोटा देश है। हिंद महासागर में स्थित मालदीव की भू राजनीतिक स्थिति दो महत्वपूर्ण व्यापारिक जल मार्गों पर स्थित है। पश्चिमी हिंद महासागर में अदन की खाड़ी और होर्मुज जलडमरूमध्य स्थित है। वहीं पूर्वी हिंद महासागर में मलक्का जलडमरूमध्य स्थित है,जो चोक पॉइंट के बीच एक टोल गेट का क निर्माण करती हैं। जहां से भारत के कुल अंतरराष्ट्रीय विदेशी व्यापार का 50 प्रतिशत और ऊर्जा आयात का 80 प्रतिशत व्यापार इसी अंतर्राष्ट्रीय शिपिंग लेन से होकर गुजरता है। दक्षिण एशिया का सबसे छोटा देश होने के बावजूद मालदीव अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण विभिन्न विकसित देशों

जैसे अमेरिका , जापान और चीन जैसे बड़े देशों को अपनी ओर आकर्षित करता है।जो मालदीव के भू राजनीतिक महत्व को दर्शाते है। दक्षिण एशिया में भारत एवं मालदीव की अवस्थिति भू राजनीतिक और भू सामरिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। दोनों ही देश दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

<u>भारत मालदीव संबंध</u>

भारत और मालदीव के संबंध प्राचीन समय से ही घनिष्ठ रहे हैं। दोनों देशों में जातीय, भाषाई, सांस्कृतिक, धार्मिक और वाणिज्यिक सभी स्तरों पर मधुर संबंध देखने को मिलते हैं। भारत एवं मालदीव दोनों ही देश ब्रिटिश उपनिवेश के अधीन रहे। भारत को सन् 1947 और मालदीव को सन् 1965 में आजादी मिली। भारत वह प्रथम देश बना जिसने मालदीव को स्वतंत्र राष्ट्र का दर्जा दिया और मालदीव के साथ अपने राजनीतिक संबंध स्थापित करने की दिशा में वर्ष 1972 और 1980 में रेजिडेंट उच्चायुक्त के रुप में अपना मिशन स्थापित किया। मालदीव ने भी भारत के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए वर्ष 2004 में नई दिल्ली में एक पूर्ण उच्चायोग की स्थापना की जो उस वक्त के महत्त्वपूर्ण राजनायिक मिशनों में से एक था। भारत एवं मालदीव के मध्य द्विपक्षीय संबंध भी प्रारंभ से मजबूत रहे हैं। मालदीव में कई भारतीय प्रवासी निवास करते हैं जो वहां विभिन्न प्रकार के व्यवसायों जैसे डॉक्टर, नर्स,टीचर, मैनेजर, इंजीनियर, अकाउंटेंट में कार्यरत हैं। जिनकी जनसंख्या लगभग 30,000 है। । मालदीव के भी करीब 5,000 प्रवासी भारत में निवास करते हैं। वे भारत की स्वास्थ्य और शैक्षिक सुविधाओं के लिए ज्यादातर केरल की राजधानी, तिरुवनन्तपुरम में निवास करते हैं।

वर्ष 1965 में ब्रिटिश शासन के नियंत्रण से स्वतंत्र होने के पश्चात मालदीव में जनमत संग्रह के द्वारा गणराज्य की स्थापना हुई जिसके बाद मालदीव के पहले राष्ट्रपति **इब्राहिम नासिर** बने। उन्होंने 10 वर्षों के कार्यकाल के बाद 1978 में अपना पद छोड़ दिया। इसके बाद **मौमून अब्दुल गयूम** राष्ट्रपति बने। इनका सबसे लंबा कार्यकाल रहा जो वर्ष 1978 से 2008 तक लगभग 30 वर्षों तक चला जिसमें तानाशाही का शासन रहा। इन्हीं कारणों से तीन बार उनके तख्तापलट की कोशिश की गई। राष्ट्रपति गयूम और भारत के प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने दोनों देशों के संबंधों को बेहतर करने का प्रयास किया। वर्ष 1988 में लिट्टे विद्रोहियों के द्वारा गयूम के विरुद्ध संघर्ष आरंभ कर दिया गया तब भारत के प्रधानमंत्री **राजीव गांधी** के द्वारा मालदीव में **ऑपरेशन कैक्टस** चलाया गया जिससे वहां हालात को सामान्य बनाएं जाने का प्रयास किया गया। दोनों देशों ने 1990 के बाद आर्थिक संबंधों के निर्माण पर महत्वपूर्ण बल दिया। वर्ष 2004 में मालदीव में सुनामी के कारण अत्याधिक आर्थिक नुकसान हुआ जिसके बाद भारत ने **ऑपरेशन सी वेव्स** के द्वारा मालदीव को 10 करोड़ की आर्थिक सहायता पहुंचाई। भारत हमेशा से मालदीव के साथ प्रथम प्रतिक्रियाशील

राष्ट्र के रूप में खड़ा रहा है। वर्ष 2008 में संविधान में परिवर्तन के बाद मालदीव में पहली बार बहुदलीय लोकतांत्रिक निर्वाचन हुए। मालदीव में मुख्य रूप से कुल 9 राजनीतिक दल हैं। किंतु उनमें से केवल 2 ऐसे राजनीतिक दल हैं जिनका मालदीव की राजनीति में वर्चस्व रहा है। **पहला माल्डीवियंस डेमोक्रेटिक पार्टी (एम डी पी)** जिसे भारत समर्थक माना जाता है। दूसरा **प्रोग्रेसिव पार्टी ऑफ मालदीव (पी पी एम)** जिसे चीन समर्थक माना जाता है। मालदीव में राष्ट्रपति चुनाव के बाद एमडीपी दल के मुहम्मद नशीद राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। 2008 से 2012 तक मुहम्मद नशीद के कार्यकाल में मालदीव और भारत के संबंध मैत्रीपूर्ण और सहयोगात्मक रहे। जहां एक ओर भारत ने अपने पड़ोसी राज्यों के लिए **"पड़ोसी प्रथम की नीति"** अपनाई वहीं मालदीव के राष्ट्रपति मुहम्मद नशीद के द्वारा **"भारत प्रथम"** की नीति का अनुसरण किया गया। वर्ष 2013 में चुनाव हुए जिसमें पीपीएम दल के **अब्दुल्ला यामीन अब्दुल गयूम** मालदीव के नए राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। गयूम की विदेशनीति चीन की ओर होने के कारण 2013 से 2018 तक भारत और मालदीव के बीच तनाव पैदा हुए। किंतु आपसी तनाव होने के बावजूद भारत के द्वारा मालदीव को दी जाने वाली विकास सहायता, सुरक्षा और रणनीतिक संबंध स्थापित करने के प्रयास जारी रहे। दिसंबर 2014, मालदीव की राजधानी माले के वाटर प्लांट में आग लगने के कारण भारत ने मालदीव के जल संकट को दूर करने के लिए **ऑपरेशन नीर** चलाया। जिसके अंतर्गत भारतीय नौसेना आईएनएस सुकन्या के द्वारा 35 टन ताजा पानी और आईएनएस दीपक के द्वारा 1000 टन पानी माले पहुंचाया गया। जो भारत के अपने पड़ोसी देशों के साथ संवेदनशील संबंधों को दर्शाता है।

नवम्बर 2018 के राष्ट्रपति चुनाव में एमडीपी दल के नेता **इब्राहिम मुहम्मद सोलिह** निर्वाचित हुए। इनके कार्यकाल में भारत और मालदीव के संबंधों में पुनः सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दिए। प्रधानमंत्री मोदी सोलिह के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए। सोलिह ने **" भारत प्रथम"** की नीति का पूरा समर्थन किया। सोलिह राष्ट्रपति बनने के बाद अपनी पहली विदेश यात्रा में भारत आए। वहीं 2019 के लोकसभा चुनाव में जीत के बाद अपने दूसरे कार्यकाल में प्रधानमंत्री मोदी के द्वारा पहली विदेश यात्रा में मालदीव की यात्रा की गई। जो दोनों देशों के बीच मित्रता और सहयोगात्मक संबंध को दर्शाती है। वर्ष 2020 में कॉविड–19 महामारी के संकट के समय भारत ने पड़ोसी प्रथम की नीति का अनुसरण करते हुए **ऑपरेशन संजीवनी** के द्वारा मुफ्त 1 लाख कॉविड वैक्सीन के साथ 2 करोड़ की आर्थिक सहायता राशि भी मालदीव को पहुंचाई गई। मालदीव में दिनांक 17 नवंबर 2023 को चुनाव संपन्न हुए जिसमें 54 प्रतिशत वोट के साथ पीपीएम दल के **मोहम्मद मुइज्जू** को राष्ट्रपति निर्वाचित किया गया जिन्हें चीन समर्थक माना जाता है। मालदीवियन राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने इंडिया आउट के नारे को अपने चुनाव प्रचार का माध्यम भी बनाया था। जनवरी 2024 में अपनी प्रथम विदेश चीन की यात्रा के दौरान मालदीवियन राष्ट्रपति मुइज्जु ने चीन के साथ कुल 20 समझौतों पर हस्ताक्षर किए एवं मोहम्मद मुइज्जू ने इस बात पर जोर दिया कि "चीन और भारत के साथ व्यापार को

आगे बढ़ाएंगे स्वतंत्रता और संप्रभुता की रेखाएं स्पष्ट रूप से खींची जाएंगी विदेशी सैन्य उपस्थिति हटा दी जाएगी।" मालदीव में हुए नेतृत्व परिवर्तन एवं चीन के साथ मालदीव के नए समझौते भारत-मालदीव संबंधों के लिए चिंता का विषय माना जा सकता है।

प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के विशेषज्ञ प्रो. मुस्तफा कमाल पाशा के अनुसार " श्रीलंका और मालदीव जैसे छोटे देश अपनी रणनीतिक स्थिति का फायदा उठाने की कोशिश करते हैं और समय-समय पर पाला बदलते रहते हैं। मालदीव में चीन समर्थक मुइज्जू की जीत से चीन को फायदा तो पहुंचा सकता हैं लेकिन वहां भारत का प्रभाव तुरंत कम नहीं होगा।" मालदीव के वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति दोनों देशों के राजनायिक और राजनीतिक संबंधों को खतरे में डालते हुए नजर आ रहे हैं। जिन संबंधों का निर्माण पिछले छह दशकों में भारत एवं मालदीव ने सफलतापूर्वक किया है।

मालदीव पर चीन का प्रभाव

हिंद महासागर की भौगोलिक अवस्थिति भू-राजनीतिक दृष्टिकोण से भारत के साथ साथ चीन के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है । यही कारण है कि पिछले कुछ दशकों में चीन ने मालदीव के प्रति अपनी आर्थिक कूटनीति का उपयोग करना प्रारंभ कर दिया है। मालदीव में संरचनात्मक विकास के नाम पर चीन ने 1.3 अरब का कर्ज भी दिया है। जो मालदीव जैसे छोटे द्वीप देश को कर्ज जाल में फसा सकता है। मालदीव,चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव प्रोजेक्ट का हिस्सा भी है। जिसके कारण मालदीव और चीन विभिन्न स्तरों पर अपने संबंधो को मजबूत कर रहें हैं। वर्तमान में दोनों देशों के बीच सैन्य समझौते भी हुए हैं जिसके अंतर्गत चीन मालदीव को मुफ्त सैन्य सहयोग उपलब्ध कराएगा। चीन और मालदीव के बीच मुफ्त व्यापार समझौता भी हुआ है,जो दोनों देशों के बीच व्यापारिक संबंधों को दीर्घकालीन समय के लिए मजबूत बनाएगा। चीन लगातार अपनी आर्थिक कूटनीति के द्वारा मालदीव के विभिन्न विकास कार्यों में सफलता पूर्वक सबसे बड़े सहायक देश के रूप में उभरता जा रहा है।

वर्तमान में चीन की विदेशनीति दक्षिण एशियाई राष्ट्रों में अपनी आर्थिक शक्ति का प्रदर्शन करते हुए इन देशों को कर्ज जाल में फंसाकर कर अपने साथ मिलाना है। ताकि भारत की शक्ति को इस क्षेत्र में नियंत्रित किया जा सके। भारत की विदेश नीति अपने पड़ोसी देशों के प्रति हमेशा से बेहद संवेदनशीलत रही है। पड़ोसी प्रथम का अनुसरण करते हुए भारत हमेशा मालदीव के साथ प्रथम प्रतिक्रियाशील राष्ट्र के रूप में खड़ा रहा है। लेकिन वर्तमान में मालदीव के लोग भारत की सैन्य उपस्थिति को अपने देश की संप्रभुता के हनन के रूप में संदेह की दृष्टि से देखते हैं। जबकि भारत ने आज तक कभी भी अपने सैन्य ताकत का प्रयोग किसी देश की संप्रभुता का हनन करने के लिए नहीं किया है। कुछ शोधकर्ताओं का यह भी मानना है कि हिमालयी

सीमा पर भारत और चीन के बीच तनाव बढ़ने पर मालदीव प्रभावित हो सकता है। चीन और भारत दोनों ही हिंद महासागर में अपनी मौजूदगी को बनाएं रखना चाहते है। मालदीव और श्रीलंका जैसे देशों की भू-राजनीतिक स्थिति उन्हें भारत और चीन के साथ अपने राष्ट्रहितों को पूरा करने में मदद करती है। प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के विशेषज्ञ प्रो. मुस्तफा कमाल पाशा के अनुसार "भारत ने मालदीव में बड़े निवेश किए है मालदीव की सरकार वहां तैनात भारतीय सैनिकों को भले ही वापस भेज दे लेकिन भारत के निवेश तो वहीं रहेंगे मौजूदा स्थिति में मालदीव भारत और चीन के बीच संतुलन बनाने की कोशिश करेगा।"

<u>साहित्य समीक्षा :</u>

- वर्ष 2008 में ईशा बुक्स, नई दिल्ली द्वारा **रमेश त्रिवेदी** की प्रकाशित पुस्तक '**इंडिया रिलेशन विथ हर नेबर्स',** में भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जिनमें मुख्य रूप से बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, पाकिस्तान, मालदीव के साथ भारत के विभिन्न समझौतों, संधियों, द्विपक्षीय संबंधों, युद्धों, संघर्षों और भारत की विदेश नीति को एक रुपरेखा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस साहित्य में लेखक द्वारा भारत के पड़ोसी राज्यों के साथ संबंधों और चुनौतियों का भी विवरण प्रस्तुत किया गया है। परंतु प्रस्तुत साहित्य में भारत और मालदीव के बदलते राजनीतिक परिदृश्य में दोनों देशों के विदेश नीतियों को प्रभावित करने वाले कारकों के संबंध में ज्ञान का अभाव ज्ञात होता है।
- वर्ष 2012 में कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस द्वारा **सी. राजामोहन** की प्रकाशित पुस्तक'**समुद्र मंथनः शीनो-इंडियन रिवाल्री इन द इंडो पेसिफिक**, में मुख्यतः भारत, चीन और अमेरिका के त्रिकोणीय संघर्ष का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। एक उभरती हुई शक्ति के रूप में भारत और चीन के बीच हिंद महासागर में बढ़ती प्रतिस्पर्धा मुख्य रूप से अमेरिका की भूमिका का व्यापक विवरण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत साहित्य में लेखक द्वारा भारत, चीन और अमेरिका के बीच तनाव को कम करने और हिंद महासागर में व्यवस्था निर्माण की संभावनाओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है। हिंद महासागर में बड़ी शक्तियों के आगमन से मुख्य रूप से चीन और अमेरिका के बढ़ते प्रभाव के कारण मालदीव जैसे छोटे राज्यों के राष्ट्रहित भी प्रभावित होते आए हैं। परंतु प्रस्तुत साहित्य में हिंद महासागर में छोटे राज्यों के राष्ट्रहित कैसे प्रभावित होते है इस संबंध में ज्ञान का अभाव ज्ञात होता है।
- वर्ष 2015 में विज बुक द्वारा **साजी अब्राहम** की प्रकाशित पुस्तक ' **चाइनीज रोल इन द इंडियन ओसनः इट्स इंप्लीकेशन इन इंडियाज नेशनल सिक्योरिटी,** में चीन के हिंद महासागर में बढ़ते प्रभाव और उसके मोतियों की माला की रणनीति के माध्यम से अपने ताकत को बढ़ाने और भारत के

राष्ट्रहित को प्रभावित करने के साथ-साथ भारत की सुरक्षा का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत साहित्य में लेखक द्वारा चीन और भारत के रणनीतिक घेरेबंदी और कार्यप्रणाली का व्यापक विवरण प्रस्तुत किया गया है। किसी भी देश की विदेश नीति अपने भू राजनीतिक स्थिति के कारण भी प्रभावित होती है। किंतु प्रस्तुत साहित्य में हिंद महासागर में उपस्थित छोटे राज्यों के विदेश नीति और राष्ट्रहित के संबंधों में व्यापक विवरण का अभाव ज्ञात होता है। जिसे चीन जैसे देशों द्वारा अपने हित पूर्ति के लिए प्रभावित किया जाता रहा है।

- वर्ष 2017 विज पब्लिकेशन द्वारा **वेणुगोपाल बी. मेनन** की प्रकाशित पुस्तक' **सब रीजनल कोऑपरेशन इन साउथ एशियाः इंडिया, श्रीलंका एंड मालदीव,** में दक्षिण एशिया के समुद्री क्षेत्र में भारत, श्रीलंका और मालदीव के त्रिपक्षीय संबंधों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। भारत के लिए श्रीलंका और मालदीव अपनी भू राजनीतिक स्थिति के कारण सामरिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत साहित्य में लेखक द्वारा इन देशों के बीच साझा कनेक्टिविटी के साथ साथ राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सुरक्षा संबंधों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। हिंद महासागर में चीन के बढ़ते प्रभाव मुख्य रूप से दक्षिण एशियाई देशों में चीन की विदेश नीति का विवरण किया गया है। किंतु प्रस्तुत साहित्य में मालदीव जैसे देश की राजनीतिक अस्थिरता के संबंध में ज्ञान का अभाव ज्ञात होता है।
- वर्ष 2017 राज पब्लिकेशन द्वारा **लक्ष्मीनारायण बुस्सा** की प्रकाशित पुस्तक' **इंडिया मालदीव रीलेशन** ,में भारत एवं मालदीव के संबंधों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जिनमें मुख्य रूप से मालदीव के इतिहास, विदेश नीति, अर्थव्यवस्था का विवरण किया गया है। इस साहित्य में छोटे द्वीपों वाले देशों की सुरक्षा का भी विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। जिनमें मालदीव के भू राजनीतिक स्थिति के महत्व को दर्शाते हुए भारत और मालदीव के संबंधों के विभिन्न आयामों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। किंतु प्रस्तुत साहित्य में भारत और मालदीव के सांस्कृतिक संबंधों के संदर्भ में सीमित ज्ञान प्राप्त होता है। वर्तमान परिदृश्य में भारत और मालदीव के संबंधों को गहनता से समझने के लिए दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंधों का अध्ययन करना अनिवार्य प्रतीत होता है।
- वर्ष 2016 पेंटागन प्रेस द्वारा **आनंद कुमार** की प्रकाशित पुस्तक **' मल्टी पार्टी डेमोक्रेसी इन द मालदीव एंड द इमर्जिंग सिक्योरिटी एनवायरमेंट इन द इंडियन ओसन रीजन,** में सन 1975 से 2008 तक 30 वर्षों की तानाशाही के उपरान्त मालदीव के बहुदलीय लोकतंत्रीय व्यवस्था का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। मालदीव अपनी भू राजनीतिक स्थिति के कारण रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत साहित्य में लेखक के द्वारा मालदीव के भू राजनीतिक स्थिति के प्रति आकर्षित होने वाले विकसित और विकासशील राष्ट्रों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जिनमें मुख्य रूप से

महाशक्तियों के आगमन और मालदीव की राजनीति में महाशक्तियों का हस्तक्षेप, बहुदलीय लोकतंत्र में उग्रवाद और कट्टरपंथियों की उपस्थिति भी यहां की राजनीति को कैसे समय समय पर प्रभावित करते रहे हैं इसका विवरण प्रस्तुत किया गया है। किंतु प्रस्तुत साहित्य में मालदीव की बदलती सरकारों और यहां की जनता को प्रभावित करने वाले कारकों, चुनावी एजेंडों के विषय में बहुत पूर्व के ज्ञान प्राप्त होते है। वर्तमान संदर्भ में मालदीव की राजनीति को समझने के लिए नवीनतम कार्य का होना अनिवार्य है।

- वर्ष 2022 ओरिएंट ब्लैक स्वान प्राइवेट लिमिटेड के द्वारा **राजेश मिश्रा** की प्रकाशित पुस्तक **'भारतीय विदेशनीति भूमंडलीकरण के दौर में** , में चीन की विस्तारवादी नीति के कारण भारत की विदेशनीति में परिवर्तन का विवरण प्रस्तुत करते हैं। चीन और अमेरिका जैसे देशों के कारण वर्तमान में नया शीत युद्ध जैसी स्थिति पनपने लगी है। प्रस्तुत साहित्य में लेखक द्वारा भूमंडलीकरण के दौर में व्यापार और निवेश के कारण राष्ट्रों की परिवर्तित होती विदेश नीति जिनमें मुख्य रूप से चीन की लगातार बढ़ती हुई सैन्य शक्ति और उसके आर्थिक प्रभावों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जिसके कारण चीन अपने पड़ोसी देशों के हितों को प्रभावित करता आया है। परंतु प्रस्तुत साहित्य में मालदीव जैसे छोटे किंतु महत्वपूर्ण भू राजनीतिक स्थिति वाले देश के संबंध में भारत और चीन की बदलती विदेश नीति में ज्ञान का अभाव ज्ञात होता है।
- वर्ष 2016 जर्नल ऑफ सोशल साइंस, के द्वारा **एस. वाई. सुरेन्द्र कुमार** की प्रकाशित लेख **' चाइना फुटप्रिंट इन मालदीवः कंसर्न फॉर इंडिया?** में हाल के दशकों में चीन द्वारा दक्षिण एशियाई क्षेत्रों में अपने हितों को मजबूत करने की रणनीति का उल्लेख प्रस्तुत किया गया है।प्रस्तुत लेख में लेखक द्वारा उत्तर पूर्व और दक्षिण पूर्व में चीन की बदलती विदेश नीति जिनमें मुख्य रूप से मालदीव और चीन की द्विपक्षीय संबंधों के अंतर्गत राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य, समुद्री सुरक्षा का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। भारत और मालदीव के संबंधों में चीन के बढ़ते प्रभाव के बावजूद भारत ने पड़ोसी प्रथम की नीति का अनुसरण करते हुए अपने छोटे पड़ोसी राज्यों के प्रति बड़े भाई के स्वरूप व्यवहार किया है। किंतु प्रस्तुत लेख में पड़ोसी प्रथम की नीति को मजबूत करने और मालदीव के साथ की दिशा में भारत की नीतियों का खोजपूर्ण विश्लेषण करने में ज्ञान का अभाव प्रतीत होता है।
- वर्ष 2016 ग्लोबल जर्नल ऑफ मेडिकल रीसर्च, के द्वारा **विनीता भट्ट** की प्रकाशित लेख **'इंडिया एंड चाइना इन द मालदीवः रिसेंट डेवलपमेंट एण्ड इमर्जिंग ट्रेंड** , में लेखिका चीन और मालदीव की भागीदारी का उल्लेख करती हैं। प्रस्तुत लेख को लेखिका द्वारा चार श्रेणी में विभाजित किया गया है जिनमें पहला चीन और मालदीव के भागीदारी में भारत की भूमिका क्या है? दूसरा व्यापार क्षेत्र में मालदीव में भारत और चीन के कार्यों का अध्ययन तीसरा मालदीव में चीनी उपनिवेश चौथा हिंद

महासागर में चीन के बढ़ते प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत करती हैं। किंतु अमेरिका के बाद सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश चीन है। ऐसे में केवल दक्षिण एशियाई क्षेत्रों में चीन के बढ़ते प्रभाव के रूप में नहीं बल्कि वर्तमान में दक्षिण एशियाई देशों में चीन के प्रति कितनी निर्भरता बढ़ी है। इस परिदृ श्य में अध्ययन करना अनिवार्य है।

- वर्ष 2022 एशिया पैसिफिक सेंटर फॉर सिक्योरिटी स्टडीज, के द्वारा **क्रिस्टोफर स्नेडेन** की प्रकाशित लेख'**शिफ्टिंग जीओ पोल्टिक्स इन द ग्रेटर साउथ एशिया रीजन**, में लेखक दक्षिण एशिया के देशों अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान,भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका जैसे देशों में क्षत्रिय एक जुटता की कमी और दक्षिण एशियाई क्षत्रिय सहयोग संगठन में उपस्थित संभावित चुनौतियों और कमियों के बारे में उल्लेख करते हैं। प्रस्तावित लेख में भू राजनीतिक दृष्टिकोण से दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के विदेशनीति को समझने का प्रयास किया गया है। किंतु प्रस्तुत लेख में भारत एवं चीन के झुकाव को केवल भू राजनीतिक महत्व के साथ नहीं समझा जा सकता है। इसका विभिन्न आयामों में अध्ययन करना आधुनिक काल में अंतरराष्ट्रीय संबंधों को समझने के लिए अनिवार्य है।
- वर्ष 2018 राइजिंग पॉवर क्वार्टरली,के द्वारा **मोहन मालिक** की प्रकाशित लेख '**चाइना एंड इंडियाः मैरीटाइम मेनूवर्स एंड ज्योपोल्टिकल शिफ्ट्स इन द इंडो पैसिफिक,** में लेखक वर्तमान में तेजी से बदलते भू राजनीतिक गतिशीलता का वर्णन प्रस्तुत करते हैं। जिनमें मुख्यतः चीन और भारत जैसे देशों का हिंद महासागर में नौसैनिक अड्डे और आर्थिक कूटनीति के प्रयोग का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। जिसके कारण मालदीव की विदेशनीति में परिवर्तन देखा जा सकता है। किंतु प्रस्तुत लेख में भारत एवं मालदीव के साझा द्विपक्षीय संबंधों और भारत के संवेदनशील पड़ोसी होने वाले कारकों का वर्णन नहीं मिलता है।जो भारत एवं मालदीव के संबंधों को दक्षिण एशिया के अन्य देशों के साथ भिन्न बनाता है।

<u>शोध अंतरालः</u>

उपर्युक्त साहित्य समीक्षा से यह ज्ञात होता है कि, भारत की विदेश नीति संबंधी शोध कार्य संपन्न हुए हैं ,किन्तु अधिकतम भारत के साथ हिंद महासागर में चीन और अमेरिका जैसी महाशक्तियों के संदर्भ में है। भारत ने अपने विदेश नीति में पड़ोसी प्रथम की नीति अपनाई है। भारत के लिए अपने समुद्री सीमाओं वाले क्षेत्रों की सुरक्षा सुनिश्चित करना रणनीतिक रूप से अपरिहार्य है। परंतु इस संबंध में भारत के सामुद्रिक सीमाओं में स्थित मालदीव जैसे पड़ोसी देश के साथ संबंधों के संदर्भ में शोधकार्य का अभाव विद्यमान है।

शोधकर्ताओं द्वारा विगत वर्षों से लेकर वर्तमान तक भारत एवं मालदीव संबंधों पर कोई नवीनतम कार्य नहीं हुए हैं। अतः इस संबंध में वर्तमान परिदृश्य में तेजी से बदलते वैश्विक और क्षेत्रीय परिस्थितियों में भारत और मालदीव के संबंधों का अध्ययन अनिवार्य है।

<u>अनुसंधान कार्य की समस्याः</u>

प्रस्तावित अनुसंधान शीर्षक "दक्षिण एशिया में भारत एवं मालदीव का भू-राजनीतिक महत्व एवं उनके मध्य द्विपक्षीय संबंधों का अध्ययन (वर्ष 2008 से 2024 तक)" में दक्षिण एशिया में भारत एवं मालदीव की भू-राजनीतिक महत्व एवं उनके मध्य द्विपक्षीय संबंधों में विद्यमान निम्नलिखित समस्याओं का चयन किया गया है

- क्या दक्षिण एशिया में भारत एवं मालदीव की स्थिति भू-राजनीतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है?
- दक्षिण एशिया में भारत एवं मालदीव के क्षेत्रीय सहयोग एवं विकास के मुख्य बिंदु क्या है?
- क्या मालदीव में राजनीतिक परिवर्तन भारत एवं मालदीव के संबंधों में भी परिवर्तन लाता है ?
- क्या भारत और मालदीव के संबंध द्विपक्षीय हितों पर आधारित है?
- क्या मालदीव पर चीन के आर्थिक कूटनीति का प्रभाव बढ़ रहा है?
- क्या वर्तमान में चीन और मालदीव के संबंधों के कारण भारत के राष्ट्रहित प्रभावित हुए है?

<u>अनुसंधान कार्य के उद्देश्य</u>

प्रस्तावित अनुसंधान के निम्नलिखित उद्देश्य हैंः

- दक्षिण एशिया में भारत एवं मालदीव के भू-राजनीतिक महत्व का अध्ययन करना।
- दक्षिण एशिया में भारत एवं मालदीव के क्षेत्रीय सहयोग एवं विकास के मुख्य बिन्दुओं का अध्ययन करना ।
- वर्ष 2008 से 2024 तक मालदीव में सत्ता परिवर्तन के मध्य भारत-मालदीव वैदेशिक संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- भारत-मालदीव के द्विपक्षीय संबंधों का अध्ययन करना।
- मालदीव में चीन के बढ़ते हुए प्रभावों का एवं भारत-मालदीव संबंधों में इसके प्रभावों का अध्ययन करना।

- भारत-मालदीव संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पना:

प्रस्तावित अनुसंधान हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है:

- दक्षिण एशिया में भारत एवं मालदीव की भू-राजनीतिक एवं सामरिक स्थिति दोनों देशों के मध्य द्विपक्षीय संबंधों में सहयोग के पक्ष को विकसित करते हैं।
- मालदीव में वर्ष 2008 से 2024 के मध्य हुए सत्ता परिवर्तन ने भारत-मालदीव के द्विपक्षीय संबंधों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है।
- चीन की आर्थिक कूटनीति मालदीव और भारत के संबंधों को प्रभावित करती है।

अनुसंधान प्रारूप तथा शोध पद्धतिः

- प्रस्तावित शोध में शोधार्थी द्वारा ऐतिहासिक, तुलनात्मक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा जिसका विवरण निम्नवत है:
- ऐतिहासिक पद्धति-वर्तमान अनुसंधान में इस पद्धति का प्रयोग भारत एवं मालदीव के संबंधों के वर्तमान स्वरूप के मूल्यांकन में ऐतिहासिक आंकड़ों के विश्लेषण हेतु किया जाएगा।
- तुलनात्मक पद्धति का उपयोग भारत-मालदीव के बदलते सामरिक, आर्थिक रणनीति और राजनीति के बदलते परिदृश्य में दोनों देशों की विदेशनीति और चीन की मालदीव के प्रति बदलती विदेश नीति का तुलनात्मक अध्ययन करने में सहायक होगा।
- वर्णनात्मक पद्धति 2008 से 2024 तक भारत-मालदीव के संबंधों का गहनता से अध्ययन करने और इसमें चीन की मालदीव पर बढ़ती आर्थिक शक्ति के वर्तमान परिदृश्य को समझने में उपयोगी होगा।
- विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग करके भारत और मालदीव के संबंधों पर भू-राजनीतिक स्थिति के कारण दोनों देशों के संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव और चीन के मालदीव पर निरंतर बढ़ते आर्थिक प्रभावों के कारकों का विश्लेषण करने में सहायक होगा।

तथ्य संकलन में उपयोग किए जाने वाले उपकरण:

प्रस्तावित शोध कार्य में द्वितीय स्रोतों का उपयोग किया जाएगा। द्वितीय प्रविधि में तथ्यों के संकलन में विभिन्न पुस्तकों, प्रकाशित शोध ग्रंथों, शोध प्रतिवेदन, भारत सरकार के विदेश मंत्रालयों के वार्षिक प्रतिवेदन, मानक शोध पत्रों, पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों, मानचित्रों, तालिकाओं, रेखाचित्रों और पुस्तकालय विधि का उपयोग किया जाएगा।

अध्ययन की सार्थकता :

किसी भी देश की विदेश नीति उस देश की राष्ट्रहित पर आधारित होती है। वर्तमान परिदृश्य में भारत और मालदीव के संबंधों का अध्ययन अनिवार्य है। मालदीव अपनी भू राजनीतिक स्थिति के कारण भारत के साथ साथ चीन के लिए भी रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। दोनों ही देशों की हिंद महासागर में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और इस संदर्भ में मालदीव की भूमिका, भारत की विदेशनीति में उभरती हुई नई चुनौतियां और उसके समाधानों पर चर्चा करते हुए उनका उत्थान करना इस शोध की सार्थकता है।

वर्तमान समस्याओं के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकताः

हिंद महासागर में विभिन्न महाशक्तियों खास करके चीन के आगमन ने भारत के विभिन्न पड़ोसी राज्यों के राष्ट्रहितों को प्रभावित किया है। वर्तमान में भारत के संदर्भ में यह समझना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है की भारत के पड़ोसी राज्य भारत के प्रति कैसी विदेश नीति का अनुसरण करते हैं। मालदीव की भू राजनीतिक स्थिति भारत के लिए सामरिक,आर्थिक और सुरक्षा के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः यह शोध 2008 से 2024 तक भारत मालदीव के बदलते परिपेक्ष्य में दोनों देशों के संबंधों को समझने में योगदान देना चाहता है।

विद्यमान ज्ञान में इनका योगदानः

राजनीति शास्त्र का क्षेत्र निरंतर अनुसंधान से विकसित होता रहा है। भारत के छोटे पड़ोसी राज्य मालदीव के संदर्भ में शोध कार्य में विद्यमान ज्ञान में अभाव के कारण इस अनुसंधान क्षेत्र का चयन किया गया है। प्रस्तावित अनुसंधान वर्तमान परिदृश्य में भारत-मालदीव के संबंधों को समझने और संबंधों में विद्यमान संभावित चुनौतियों और उसके समाधान को समझने में योगदान करना चाहता है।

भविष्य कार्यः

वर्तमान में दक्षिण एशिया के क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव और हिंद महासागर में भारत और चीन के सामरिक रणनीति और उससे प्रभावित होने वाले पड़ोसी राज्य मालदीव के संदर्भ में ज्ञान की प्राप्ति होगी। यह अनुसंधान भावी शोधकर्ताओं के लिए अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत-मालदीव के 2008 से 2024 तक के संबंधों को

समझने में प्रेरणा स्रोत साबित होगा। अनुसंधान के द्वारा भारत और मालदीव के संबंधों से जुड़े कई प्रश्न के उत्तर अनुसंधान के निष्कर्ष के रूप में सामने आएंगे।

<u>शोध प्रबन्ध का अध्यायीकरण इस प्रकार है</u>

प्रथम अध्याय : दक्षिण एशिया में भारत और मालदीव की भू-राजनीतिक स्थिति

द्वितीय अध्याय : दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग एवं विकास में भारत एवं मालदीव की भूमिका

तृतीय अध्याय : वर्ष 2008 से 2024 तक मालदीव में सत्ता परिवर्तन के मध्य भारत मालदीव संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन

चर्तुथ अध्याय : भारत एवं मालदीव के मध्य द्विपक्षीय संबंध और चीन का प्रभाव

पंचम अध्याय : भारत-मालदीव द्विपक्षीय संबंधों में समस्याएं एवं सुझाव

षष्ठम अध्याय : निष्कर्ष एवं सुझाव

<u>संदर्भ ग्रंथ सूचीः</u>

- त्रिवेदी, आर.,(2008). इंडिया रिलेशन विद हर नाइबर. ईशा बुक्स,नई दिल्ली
- मोहन, सी. आर.,(2012) समुद्र मंथनः शिनो इंडियन रिवाल्री इन द इंडो पेसिफिक.कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस-Http://Doi.org//10.2307/j.ctt6wpjb4
- अब्राहम, एस.,(2015). चाइनीज रोल इन द इंडियन ओसियनः इट्स इंपिलेक्शन ऑन इंडियाज नेशनल सिक्योरिटी. विज बुक
- मेनन, वी. बी.,(2017).सब रीजनल कोआपरेशन इज साउथ एशियाः इंडिया, श्रीलंका एंड मालदीव. विज पब्लिकेशन
- बुसा, एल.,(2017). इंडिया मालदीव रिलेशन. राज पब्लिकेशन. नई दिल्ली
- कुमार, ए.,(2016).मल्टी डेमोक्रेसी इन द मालदीव एंड द इमर्जिंग सिक्योरिटी एनवायरमेंट इन द इंडियन ओसियन रीजन.पेंटागन प्रेस

• कुमार, एस. वाई.,(2016). चाइना फुटप्रिंट इन मालदीवः कन्सर्न फॉर इंडिया?. जर्नल ऑफ सोशल साइंस 15(4):15

• भट्ट, वी.,(2016). इंडियन एंड चाइना इन द मालदीवः रीसेंट डेवलपमेंट एंड इमर्जिंग ट्रेंड. ग्लोबल जर्नल ऑफ मेडिकल रीसर्च 5(5):96-101

• कुमार, एस.,(2017). द स्वीट एंड सौर इंडिया मालदीव रिलेशनशिप. एवन पब्लिकेशन, नई दिल्ली

• मोबिन.(2023). ए कंपारेटिव स्टडी ऑफ इंडिया एंड चाइना इकोनॉमिक एसिस्टेंस टू मालदीव

• लांग, टी., ट्रान. वाई.,(2023). कंपटीशन स्ट्रेटजी बिटवीन चाइना एंड इंडिया इन द इंडियन ओसियन नाउ ए डेज. जर्नल ऑफ लिबर्टी एंड इंटरनेशल अफेयर्स

• फडनिस, यू.,(1981). द मालदीव इंटर वर्ल्ड पॉलिटिक्स एशियन अफेयर. अमेरिकन रिव्यू, 8:3,166-179

• बोनोफर, जे. ए.,(2010). द चौलेंज ऑफ डेमोक्रेसी इन मालदीव. इंटरनेशनल जर्नल आफ साउथ एशियन स्टडीज, 3(2),433-449

• हेंडरसन, जे. सी.,(2008). द पॉलिटिक्स ऑफ टूरिज्मः ए पर्सपेक्टिव फ्रॉम द मालदीव. नानयांग टेक्नोलॉजी यूनिवर्सिटी

• कुमार,ए.,(2016). इंडिया दृमालदीव रीलेशनः इज द रफ पैच ओवर. इंडियन फॉरेन अफेयर जर्नल, वॉल्यूम 2(2),153-167 https://www.JSTOR.org/stable

• जहीर, ए.,(2021). इंडिया चाइना रिवेल्री इन द इंडियन ओसियनः इमरजेंस ऑफ ए न्यू इंडो मालदीव स्ट्रेटेजिक डायनेमिक, जर्नल ऑफ द इंडियन ओसियन,17:1,75-95

• मिश्रा, आर.,(2022). भारतीय विदेशनीति भूमंडलीकरण के दौर में, ओरिएंट ब्लैक स्वान प्राइवेट लिमिटेड

• बोरा, ए.,(2024). डायनामिक ऑफ डिप्लोमेसीः अनरेवलिंग द टेपेस्ट्री ऑफ इंडिया मालदीव रिलेशन एक्रॉस टाइम, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटीव रिसर्च थॉट

• अख्तर, एस.,(2022).इंडिया मालदीव रीलेशनः इट्स फ्लक्स डिकेड्स, जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेट रिसर्च

• मिश्रा, वी.,(2018).इंडिया मालदीव टाईः कार्विंग द पाथ टू नोमल्सी, प्रिंट पब्लिकेशंस प्राईवेट लिमिटेड, वॉल्यूम 13(3),209-219

• बर्लिन, डी. एल.,(2006). इंडिया इन द इंडियन ओसियन,नावेल वार कॉलेज रिव्यू, 59(2),58-89http://www.JSTOR.org/stable/

• पंथ, एच. वी.,(2009).इंडिया इन द इंडियन ओसियनः ग्रोइंग मिसमैच बिटवीन एंबिशंस एंड कैपेबिलिटीज, पैसिफिक अफेयर्स, 82(2):279-297

• मलिक, एम.,(2018).चाइना एंड इंडियाः मैरीटाइम मेनूवर्स एंड ज्योपोल्टिकल शिफ्ट्स इन द इंडो पैसिफिक, राइजिंग पॉवर क्वार्टरली,3(2),67–81

• स्नेडन, सी.,(2022).शिफ्टिंग जीओ पोल्टिक्स इन द ग्रेटर साउथ एशिया रीजन, डेनियल के. एशिया पैसिफिक सेंटर फॉर सिक्योरिटी स्टडीज

वेबसाइट

Https://www.washingtonpost.comHttps://www.bbc.comHttps://www.livehindustan.comHttps://www.aljazeera.comhttps://maritimeindia.org/significance-of-the-maldives-to-india/https://eoi.gov.in/eoisearch/MyPrint.php?17555?001/0011